।।श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः।।

विशद
एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान

माण्डला

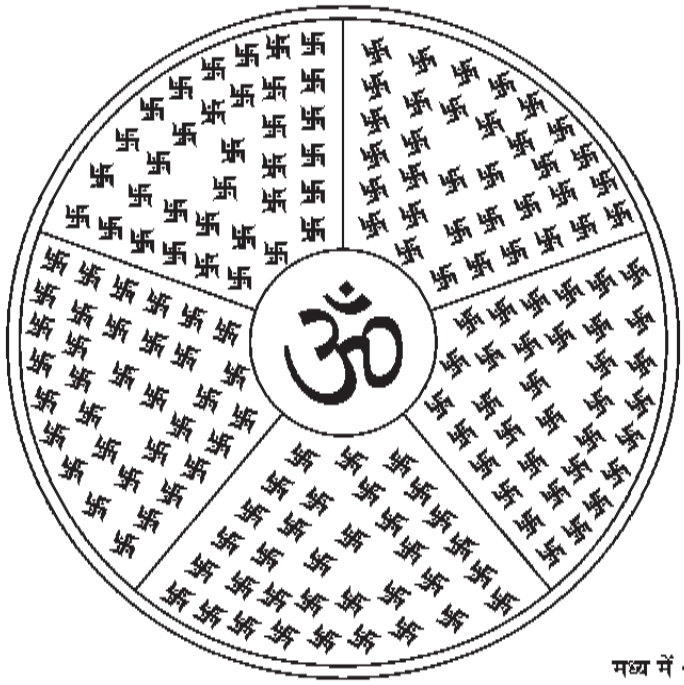

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 34 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 34 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 34 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 34 अर्घ्य
पंचम वलय में – 34 अर्घ्य
कुल 170 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

Ñfr % fo'kn,dlkSlÙkjrhFk±djfoèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxjthegkjkt

laLdj.k % izFke&2014* izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxjthegkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkselkxjthegkjkt

laiknu % cz- T;ksfrnhnh¼9829076085½ vkLFkknhnh] liuknhnh

la;kstu % lksuwnhnh] fdj.knhnh] vkjrhnhnh] mekn hnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIrLFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZydqekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykyc¨Ùkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 25@&#- ek=k

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री कमलचन्द जैन (हरसाना वाले)
श्रीमती पुष्पा जैन

श्री जितेन्द्र जैन
श्रीमती ममता जैन

5-ख/2, प्रताप नगर, मनुमार्ग, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, अलवर (राज.) मो.: 09413035556

eqnzd%ikjlizdk'ku] fnYyh Qksuua- %09811374961] 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

भक्ति से मुक्ति

जम्बूद्वीप में एक भरत, एक ऐरावत एवं बत्तीस विदेह क्षेत्र हैं तथा धातकीखंड द्वीप में पूर्व धातकी खंड और पश्चिम धातकी खण्ड एवं पुष्पकरार्ध द्वीप में पूर्व पुष्करार्ध द्वीप और पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप ऐसे दो-दो भाग हो गये हैं।

ढाई द्वीप मे सुदर्शन विजय, अचल, मंदर और विद्युन्माली ऐसे पाँच मेरु हैं एक-एक भरत, एक-एक ऐरावत और 32-32 विदेह होने से 5 भरत, 5 ऐरावत और 32x5=160 विदेह हो जाते है। प्रत्येक में छह-छह खण्ड होने से मध्य में आर्यखण्ड में कर्मभूमि व्यवस्था है। इस प्रकार ये 170 कर्मभूमियाँ मानी है। विदेह क्षेत्र के कुल बत्तीस खण्ड हैं। ये बत्तीस खण्ड ही विदेह के बत्तीस क्षेत्र कहलाते है।

इन बत्तीस क्षेत्रों के नाम इस प्रकार हैं-

1. कच्छा, 2. सुकच्छा, 3. महाकच्छा, 4. कच्छकांवती, 5. आवर्ता, 6. लांग्लावर्ता, 7. पुष्कला, 8. पुष्कलावती ये आठ देश पूर्व विदेह में सीता नदी और नील कुलाचल के मध्य स्थित हैं।

1. वत्सा, 2. सुवत्सा, 3. महावत्सा, 4. वत्सकांवती, 5. रम्या, 6. रम्यका, 7. रमणीया, 8. मंगलावती ये आठ देश पूर्व विदेहक्षेत्र में सीता नदी और निषध पर्वत के मध्य स्थित हैं।

1. पदमा, 2. सुपदमा, 3. महापदमा, 4. पदमकावती, 5. शंखा, 6. नलिनी, 7. कुमदा, 8. सरिता ये आठ देश पश्चिम विदेह में सीता नदी और निषध पर्वत के मध्य स्थित हैं।

1. वप्रा, 2. सुवप्रा, 3. महावप्रा, 4. वप्राकावती, 5. गंधा, 6. सुगन्धा, 7. गन्धिला, 8. गन्धमालिनी ये आठ देश पश्चिम विदेह में नील पर्वत और सीता नदी के मध्य स्थित हैं।

इस तरह से पाँच विदेह में 160 और पाँच भरत, पाँच ऐरावत इस प्रकार आर्यखण्डों को मिलाकर 170 कर्म भूमियाँ हैं।

इन सभी 170 कर्मभूमियों में एक साथ 170 तीर्थंकर हो सकते हैं। अजितनाथ भगवान के समय में एक साथ 170 तीर्थंकर हुए थे।

भरत और ऐरावत क्षेत्र के आर्य खण्डों में उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल के निमित्त से षट्काल (6 काल) परिवर्तन होता है। इसी तरह अवसर्पिणी के प्रथम तीन (सुषमा-सुषमा/सुषमा/सुषमा दुषमा) कालों में तथा उत्सर्पिणी के अन्तिम तीन (सुषमा-दुषमा, सुषमा, सुषमा-सुषमा) कालों में भोगभूमि होती है। यह परिवर्तन आर्यखण्डों में ही होता है। भरत और ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी सभी मलेच्छ खण्डों और विजयार्ध पर्वत पर स्थित विद्याधरों की श्रेणियों में सदा दुषमा-सुषमा काल के आदि और अन्त के समान काल रहता है। इसी प्रकार सभी विदेहों के आर्य खण्डों में सदा दुषमा सुषमा काल रहता है। आर्यखण्ड में ही धर्म-तीर्थ की प्रवृत्ति होती है। वर्तमान में सर्वाधिक विधानों के रचियता परम पूज्य साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज ने श्रावकों की विनय को स्वीकार करते हुए 170 तीर्थंकर विधान की रचना बहुत ही सरल भाषा में की हैं।

सम्पूर्ण क्रिया विधि से यह पूजा विधान करने से जीवों के समस्त विघ्न, बाधाएँ, शारीरिक कष्ट, वेदनाएँ शीघ्र ही नाश को प्राप्त हो जाती हैं। 170 तीर्थंकरों की स्तुति करने से समस्त शारीरिक, मानसिक बाधाएँ क्षणमात्र में दूर हो जाती है।

पुनः आचार्य गुरुवर 108 श्री विशदसागर जी महाराज के श्री चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक नमोस्तु करते हुए भावना भाते हैं कि आगे भी आपकी लेखनी ओर भी विशाल रूप लेते हुए जिनवाणी की सेवा में रत रहे।

-मुनि विशालसागर

मूलनायक सहित महासमुच्चय पूजा

स्थापना

अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जिन धर्म प्रधान।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, रत्नत्रय दश धर्म महान॥
सोलह कारण णमोकार शुभ, अकृत्रिम जिन चैत्यालय।
सहस्त्रनाम नन्दीश्वर मेरू, अतिशय क्षेत्र हैं मंगलमय॥
ऊर्जयन्त कैलाश शिखर जी, चम्पा, पावापुर, निर्वाण।
विहरमान, तीर्थंकर चौबिस, गणधर मुनि का है आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य- उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म जिनागम-जिनचैत्य-जिन चैत्यालय-रत्नत्रय धर्म-दशधर्म-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय सहस्त्रनाम-पंचमेरू-नन्दीश्वर सम्बन्धी चैत्य चैत्यालय- कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर-गिरनार-चम्पापुरी- पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर-विद्यमान बीस तीर्थंकर गणधरादि मुनिवराः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्रमम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तीनों रोग महादुखदायी, उनसे हम घबड़ाए हैं।
निर्मलता पाने हे जिनवर! प्रासुक जल यह लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ मुनिवराः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध की ज्वाला में हे स्वामी, सदा झुलसते आए हैं।
शीतलता पाने तुम चरणों, चन्दन घिसकर लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद का ज्ञान जगाने, तव चरणों मे आये हैं।
अक्षय पदवी पाने हे जिन!, अक्षत चरणों लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग से पीड़ित होकर, निज को ना लख पाए हैं।
शीलेश्वर बनने को चरणों, पुष्प संजोकर लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मग्न हुए प्रभु आतम रस में, क्षुधा रोग बिनसाए हैं।
निजगुण पाने को हे जिन, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: क्षुधरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटक रहे अज्ञान तिमिर में, चित् प्रकाश ना पाए हैं।
दीप जलाकर के यह घृत का, मोह नशाने आए हैं।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि में कर्म खपा, निज गंध जगाने आये हैं।
सुरभित धूप सुगन्धित अनुपम, यहाँ जलाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाया है तुमने, उस पर हम ललचाए हैं।
परम मोक्ष फल पाने हे जिन!, फल चरणों में लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **मोक्ष महापद पाएँगे, करके शांती धार।**
संयम धारण है विशद, इस जीवन का सार॥

॥शान्तये शान्तीधारा॥

रत्नत्रय को धारकर, पाएँगे शिव पंथ।
होंगे कर्म विनाश सब, साधू बन निर्ग्रन्थ॥

॥इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत॥

जयमाला

दोहा– **पूजा के शुभ भाव से, कटे कर्म जंजाल।**
महा समुच्चय रूप से, गाते हम जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

कर्म घातियाँ नाश किए जो, वह अर्हत् कहलाते हैं।
कर्म रहित हो ज्ञान शरीरी, सिद्ध महापद पाते हैं॥
पंचाचार का पालन करते, रत्नत्रयधारी आचार्य।
उपाध्याय से शिक्षापाते, धर्म भावनाधारी आर्य॥
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, सर्व साधू नित करते यत्न।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण हम, पूज रहे हैं तीनों रत्न॥
जिनवर कथित धर्म है पावन, श्रेष्ठ अहिंसामयी परम।
अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टी, रूप कहाँ है जैनागम॥
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य लोक में, कहे गये हैं मंगलकार।
घंटा तोरण ध्वज कलशायुत, चैत्यालय सोहे मनहार॥
देव शास्त्र गुरु की पूजा से, होता जीवों का कल्याण।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीस चौबीसी रही महान॥
पाँच विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान कहलाए बीस।
जम्बू शाल्मलि तरू शाख के, जिन पद झुका रहे हम शीश॥
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिन्चन ब्रह्मचर्य दश, धर्म कहे शिव के सोपान॥
दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, कारण भावना है शुभकार।
काल अनादी कष्ट निवारक, महामंत्र गाया णवकार॥
सहस्रनाम हैं तीर्थंकर के, जिनका जीव करें गुणगान।
नन्दीश्वर है दीप आठवाँ, जिस पर जिनगृह हैं भगवान॥
पंच मेरु में रहे चार वन, भद्रशाल नन्दन शुभकार।
तृतीय रहा सौमनस पाण्डुक, चौथा कहा है मंगलकार॥

चारों वन की चतुर्दिशा में, अकृत्रिम शास्वत जिनधाम।
रहे कुलाचल गजदन्तों पर, जिनबिम्बों पद विशद प्रणाम॥
हैं निर्वाण क्षेत्र मंगलमय, अतिशय क्षेत्र हैं अपरम्पार।
सहस्रकूट शुभ समवशरण है, मानस्तंभ भी मंगलकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गाये चौबीस॥
पंच भरत ऐरावत में सब, तीर्थंकर हैं सात सौ बीस।
चौदह सौ बावन गणधर कई, वर्तमान के अन्य मुनीश॥
बाहुबली भरतेश पाण्डव, हनुमान लवकुश श्री राम।
पञ्च बालयति सर्व ऋद्धियाँ, और पूजते हम शिव धाम।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पूज रहे पाँचों कल्याण।
जन्म भूमि है तीर्थ अयोध्या, जिसका रहे सदा श्रद्धान।
हम प्रत्यक्ष परोक्ष यहाँ से, पूज रहे सब तीरथ धाम।
वचन काय मन तीन योग से, करते बारम्बार प्रणाम॥

दोहा– **पूजन की है भाव से, किया अल्प गुणगान।**
जीवन शांती मय बने, पाएँ ''विशद'' कल्याण॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलह कारण-रत्नत्रय-दश धर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर, त्रिलोक एवं त्रिकाल सम्बन्धी समस्त कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सिद्धक्षेत्र-अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनीश्वेरभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **हो प्रभावना धर्म की, हो शासन जयवन्त।**
अन्तिम है यह भावना, पाएँ भव का अन्त॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

''एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान पूजा'

स्थापना

पाँच भरत ऐरावत इक सौ, साठ विदेह क्षेत्र मनहार।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, के हैं आर्य खण्ड शुभकार॥
हो सकते हैं एक साथ ही, इन सब क्षेत्रों में तीर्थेश।
एक सौ सत्तर एक काल के, तीर्थंकर का कथन विशेष॥

दोहा– **ज्ञान ध्यान तप कर स्वयं, पावें केवल ज्ञान।**
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर, जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल यह प्रासुक करके, हम लाए भाई।
जन्म जरादि रोग नाश हो, जो है दुखदायी॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में केशर की खुशबू, अतिशय महकाई।
भवाताप हो नाश हमारा, चर्च रहे भाई॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, लाए हर्षाई।
अक्षय पद पाएँ हम जिसकी, फैली प्रभुताई॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ति पाई। पूजते...॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्पों ने इस जग में, महिमा दिखलाई।
जिन भक्तों ने काम रोग से, भी मुक्ती पाई॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, हमने सुखदायी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, महिमा तव गाई॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी शुभ घी के दीपक, अनुपम प्रजलाई।
महामोह तम जिन अर्चा से, क्षण में नश जाई॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने से शुभ, धूम उड़े भाई।
नशे कर्म आठों अब मेरे, जो हैं दुखदायी॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल लाए, पावन सुखदायी।
महामोक्ष फलपाये जिसकी, फैली प्रभुताई॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाया, हमने शुभ भाई।
पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई॥
पूजते हम जिनपद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई। पूजते...॥9॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती धारा कर मिले, आतम शान्ति अपार।**
शिवपथ का राही बनें, होवे जो अविकार॥
।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा– **करने से पुष्पाञ्जली, होवे ज्ञान प्रकाश।**
अनुक्रम से प्राणी करे, सिद्ध शिला पर वास॥
।।दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलय

दोहा– **एक शतक सप्तति हुए, तीर्थंकर भगवान।**
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)

स्थापना

पाँच भरत ऐरावत इक सौ, साठ विदेह क्षेत्र मनहार।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, के हैं आर्य खण्ड शुभकार॥
हो सकते हैं एक साथ ही, इन सब क्षेत्रों में तीर्थेश।
एक सौ सत्तर एक काल के, तीर्थंकर का कथन विशेष॥

दोहा– **ज्ञान ध्यान तप कर स्वयं, पावें केवल ज्ञान।**
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अर्घ्यावली

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, आर्य खण्ड नगरी साकेत।
शास्वत जिन का जन्म नगर है, पूज रहे हम भक्ति समेत॥
चौथे काल में जिन तीर्थंकर, पाते अतिशय केवल ज्ञान।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करते गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के क्षेत्र ऐरावत, में शुभ आर्य खण्ड शुभ धाम।
नगर अयोध्या में तीर्थंकर, होवें जिनके चरण प्रणाम॥

चौथे काल में जिन तीर्थंकर, पाते अतिशय केवल ज्ञान।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, भाव सहित करतेर गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

जम्बू द्वीप में 'कच्छा' देश, है विदेह में आर्य प्रदेश।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू द्वीप 'सुकच्छा' देश, है विदेह में आर्य प्रदेश।
तीर्थंकर हो जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकच्छा' विदेह में देश, तीर्थंकर हो जहाँ विशेष।
जम्बूद्वीप का यह स्थान, करते हम प्रभु का गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' महान, जम्बूद्वीप का देश प्रधान।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप 'आवर्ता' देश, है विदेह में क्षेत्र विशेष।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लांगलावर्त्ता' देश विदेह, जम्बूद्वीप में माना येह।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कला' देश विदेह में जान, जम्बू द्वीप में रहा महान।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्पकलावती' विदेह महान, जम्बूद्वीप में है स्थान।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सा' देश विदेह प्रधान, आर्य खण्ड में रहा महान।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि वत्सावविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' क्षेत्र विदेह, आर्य खण्ड में गाया येह।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि सुवत्सावविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावत्सा' विदेह में जान, जम्बूद्वीप में रहा महान।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि महावत्सावविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सकावति' विदेह शुभकार, जम्बूद्वीप में है मनहार।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश आर्य शुभ खण्ड, जम्बूद्वीप में रहा अखण्ड।
तीर्थंकर हों जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' जम्बूद्वीप, मेरु गिरि के रहा समीप।
तीर्थंकर हो जहाँ महान्, पूजा करते हम गुणगान।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

है जम्बू द्वीप में भाई 'रमणीय' विदेह सुखदायी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है विदेह क्षेत्र में भाई, 'मंगलावति' मंगलदायी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जम्बूद्वीप बताया 'पद्मा' विदेह कहलाया।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जम्बूद्वीप में भाई, 'सुपद्मा' विदेह सुखदायी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापद्मा' विदेह भी गाया, जो जम्बूद्वीप मे पाया।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजे शिव पथगामी।।21।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'पद्मकावती' निराला, सबका मन हरने वाला।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा' विदेह शुभकारी, जिसकी महिमा है न्यारी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' विदेह शुभ गाया, अतिशयकारी कहलाया।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जम्बूद्वीप में भाई 'कुमुद' विदेह सुखदायी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जम्बूद्वीप में जानो 'सरिता' विदेह पहिचानो।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जम्बूद्वीप में सोहे, 'वप्रा' विदेह मन मोहे।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।27।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षेत्र 'सुवप्रा' भाई, शुभ प्रथम दीप सुखदायी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।28।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जम्बू द्वीप में गाया, 'महावप्रा' विदेह कहाया।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।29।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'वप्रकावती' निराला, शुभ जम्बूद्वीप में आला।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।30।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जम्बूद्वीप में भाई 'गंधा' विदेह सुखदायी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।31।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'सुगंधा' जानो, जम्बू विदेह में मानो।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।32।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधिला' विदेह शुभकारी, जो है जग जन मनहारी।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।33।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ 'गंध मालिनी' गाया, जम्बू विदेह में पाया।
होते तीर्थंकर स्वामी, हम पूजें शिव पथगामी।।34।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जम्बूद्वीप त्रय क्षेत्र में, खण्ड रहे चौंतीस।**
तीर्थंकर होते जहाँ, विशद ज्ञान के ईश।।35।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी चतुर्त्रिंशत क्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

दोहा– **पूर्व धातकी खण्ड से, तीर्थंकर भगवान।**
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाए जो निर्वाण।।

(इति मण्डलयोस्परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

पाँच भरत ऐरावत इक सौ, साठ विदेह क्षेत्र मनहार।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, के हैं आर्य खण्ड शुभकार॥
हो सकते हैं एक साथ ही, इन सब क्षेत्रों में तीर्थेश।
एक सौ सत्तर एक काल के, तीर्थंकर का कथन विशेष॥

दोहा– **ज्ञान ध्यान तप कर स्वयं, पावें केवल ज्ञान।**
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(बेसरी छन्द)

पूर्व धातकी खण्ड कहाए, भरत क्षेत्र जिसमें शुभ आए।
तीर्थंकर होते हैं ज्ञानी, आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥1॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड में भाई, क्षेत्र ऐरावत है सुखदायी।
तीर्थंकर होते हैं ज्ञानी, आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥2॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड में आए, 'कच्छा' देश विदेह कहाए।
तीर्थंकर हों केवल ज्ञानी, आर्य खण्ड में शिव सुखदायी॥3॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड निराला, देश 'सुकच्छा' जिसमें आला।
तीर्थंकर हों केवल ज्ञानी, आर्य खण्ड में शिव सुखदायी॥4॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड में गाया, देश 'महाकच्छा' कहलाया।
तीर्थंकर होते हैं ज्ञानी, आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥5॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड में भाई, देश 'कच्छकावति' सुखदायी।
तीर्थंकर होते है ज्ञानी आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥6॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड विदेहा, देशावर्ता जिससे नेहा।
तीर्थंकर होते हैं ज्ञानी, आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥7॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश लांगलावर्त्ता जानो, पूर्व धातकी द्वीप में मानो।
तीर्थंकर होते हैं ज्ञानी, आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥8॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड कहाए, देश 'पुष्कला' जिसमें आए।
तीर्थंकर होते हैं ज्ञानी, आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥9॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्पकलावति' कहलाए, पूर्व धातकी द्वीप में आए।
तीर्थंकर होते हैं ज्ञानी, आर्य खण्ड में जग कल्याणी॥10॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्धशम्भू छन्द)

पूर्व धातकी के विदेह में, "वत्सा" देश में जिन तीर्थश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, शिव पद पाते स्वयं विशेष॥11॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुवत्सा'' है विदेह में, पूर्व धातकी में तीर्थेश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, शिव पद पाते स्वयं विशेष॥12॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, 'महावत्सा' में जिन तीर्थेश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, शिव पद पाते स्वयं विशेष॥13॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, 'वत्सकावति' में जिन तीर्थेश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, शिव पद पाते स्वयं विशेष॥14॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह में भाई, जन्म प्राप्त बनते तीर्थेश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, शिव पद पाते स्वयं विशेष॥15॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, देश 'सुरम्या' में जिनदेव।
आर्य खण्ड में विशद ज्ञान पा, बनते रहते सिद्ध सदैव॥16॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी में 'रमणीया' देश में हो तीर्थंकर देव।
आर्य खण्ड में विशद ज्ञान पा, बनते रहते सिद्ध सदैव॥17॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, 'मंगलावति' है देश महान।
आर्य खण्ड में आत्म साधना, करके पाते पद निर्वाण॥18॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मा' देश है पूर्व धातकी, खण्ड द्वीप में महतिमहान।
आर्य खण्ड में आत्म साधना, करके पाते पद निर्वाण॥19॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' पूर्व धातकी, खण्ड में जिसकी है पहिचान।
आर्य खण्ड में आत्म साधना, करके पाते पद निर्वाण॥20॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड में भाई, 'महापद्मा' है देश प्रधान।
आर्य खण्ड में आत्म साधना, करके पाते पद निर्वाण॥21॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, देश 'पद्माकावति' अभिराम।
आर्य खण्ड में आत्म साधना, करके पाते पद निर्वाण॥22॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, 'शंखा' देश में जिन भगवान।
आर्य खण्ड में आत्म साधना, करके पाते पद निर्वाण।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह में भाई पूर्व धातकी खण्ड विशेष।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, करें साधना जिन तीर्थेश।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, है विदेह में कुमुदा देश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, करें साधना जिन तीर्थेश।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, कर्म भूमि में 'सरिता' देश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, करें साधना जिन तीर्थेश।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप के, है विदेह में 'वप्रा' देश।
आर्यखण्ड में जन्म प्राप्त कर, करें साधना जिन तीर्थेश।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' है विदेह में, पूर्व धातकी में शुभकार।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, मुक्ती पाते बारम्बार।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, 'महावप्रा' है मंगलवार।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, मुक्ती पाते बारम्बार।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, 'वप्रिकावती' देश मनहार।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, मुक्ती पाते बारम्बार।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, 'गंधा' देश है अतिशयकार।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, मुक्ती पाते बारम्बार।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' है विदेह में, पूर्व धातकी में शुभकार।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, मुक्ती पाते बारम्बार।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेहमें 'गंधीला' है देश महान।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, मुक्ती पाते बारम्बार।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के विदेह में, आता 'गंध मालिनी' देश।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, मुक्ती पाते बारम्बार।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी त्रय क्षेत्रों में, देश रहे चौंतिस मनहार।
तीर्थंकर जिन संयम पाकर, पाते भव सिन्धू से पार।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुर्त्रिंशत्क्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– **अपर धातकी द्वीप में, चौंतिश क्षेत्र विशेष।**
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, बनते हैं तीर्थेश॥

(इति तृतिय वलयोस्परि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत)

स्थापना

पाँच भरत ऐरावत इक सौ, साठ विदेह क्षेत्र मनहार।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, के हैं आर्य खण्ड शुभकार॥
हो सकते हैं एक साथ ही, इन सब क्षेत्रों में तीर्थेश।
एक सौ सत्तर एक काल के, तीर्थंकर का कथन विशेष॥

दोहा– **ज्ञान ध्यान तप कर स्वयं, पावें केवल ज्ञान।**
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्य छन्द)

अपर धातकी भरत क्षेत्र में जानिए, आर्य खण्ड में तीर्थंकर हों मानिए।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥1॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी क्षेत्र ऐरावत, जानिए, तीर्थंकर हो आर्य खण्ड में मानिए।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥2॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी के विदेह में सोहते, 'कच्छा' देश में भविजन का मनमोहते।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥3॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी के विदेह में जानिए, देश 'सुकच्छा' आर्य खण्ड में मानिए।
तीर्थंकर जिन ज्ञान ध्यान तपलीन हों, मोक्ष महल में जाके जो स्वाधीन हो॥4॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी के विदेह में सोहता, 'महाकच्छा' शुभ देश सु मन को मोहता।
आर्य खण्ड में जिन तीर्थंकर गाए हैं, जिनकी पूजा करने को हम आए हैं॥5॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम धातकी के विदेह में जानिए, देश 'कच्छकावती' मनोहर मानिए।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥6॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'आवर्त्ता' अपर धातकी द्वीप में, अचल मेरु भी जिसके रहा समीप में।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥7॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी में विदेह शुभकार हैं, देश लांगलावर्त्ता' जिसमें सार है।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥8॥
ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी के विदेह में जगमगे, देश 'पुष्कला' देखत में मनहर लगे।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी में भाई पहिचानिए, देश 'पुष्कलावति' विदेह में मानिए।
जिनकी पूजा को भक्ती से आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अपर धातकी में रहा, क्षेत्र विदेह महान।**
'वत्सा' देश में जन्म ले, बनते हैं भगवान।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी द्वीप में, देश 'सुवत्सा' जान।
आर्य खण्ड से जिन प्रभू, पाते हैं निर्वाण।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' रहा, अपर धातकी माँह।
आर्य खण्ड से जिन सदा, मोक्ष मार्ग दर्शाय।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम धातकी खण्ड में, है विदेह शुभकार।
आर्य खण्ड 'वत्सकावती', से जिन हों भव पार।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी में रहा, 'रम्या' देश विदेह।
तीर्थंकर आर्यखण्ड से, बनते निःसंदेह।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी द्वीप में, है विदेह में देश।
नाम 'सुरम्या' जानिए, होंय जहाँ तीर्थेश।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी खण्ड में, 'रमणीया' शुभ देश।
आर्य खण्ड में जन्म ले, शिवपद पाएँ जिनेश।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी खण्ड में, 'मंगलावति' है देश।
आर्य खण्ड सु विदेह में, होते हैं तीर्थेश।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मा' देश विदेह में, अपर धातकी द्वीप।
आर्य खण्ड में जिनप्रभू, मेरू अचल समीप।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी खण्ड में, देश 'सुपद्मा' खास।
तीर्थंकर आर्यखण्ड में, अचल मेरु के पास।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी खण्ड में, 'महापद्मा' है देश।
आर्य खण्ड सु विदेह में, होते जिन तीर्थेश।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावती' है, अपर धातकी माँह।
आर्य खण्ड सुविदेह में, तीर्थंकर सु कहाँह।।22।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

शुभ अपर धातकी जानो, 'शंखा' विदेह में मानो।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी गाया, 'नलिना' विदेह में पाया।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी सोहे, जहँ देह 'कुमुद' मन मोहे।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी आला, 'सरिता' है देश निराला।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अपर धातकी प्यारा, जहँ 'वप्रा' देश है न्यारा।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'सुवप्रा' पाएँ, जो अपर धातकी जाएँ।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अपर धातकी आला, 'महावप्रा' देश निराला।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी जानो, में 'वप्रकावति' पहिचानो।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी जाना, में 'गंधा' देश सुहाना।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी जानो, जहँ देश 'सुगंधा' मानो।।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी मांही, जहँ देश 'गंधिला' ठाई।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी जानो, जहँ 'गंधमालिनी' मानो।
हों आर्य खण्ड में भाई, तीर्थंकर जिन शिवदायी।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपर धातकी जानो, त्रय क्षेत्रों में पहिचानो।
जहँ चौंतिस देश बताए, तीर्थंकर शिवपद पाए।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुर्त्रिंशत् क्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

दोहा– **पुष्करार्ध पूरव दिशा, में शुभ चौंतिस देश।**
पावन भूमी यह कही, बने जहाँ तीर्थेश।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

पाँच भरत ऐरावत इक सौ, साठ विदेह क्षेत्र मनहार।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, के हैं आर्य खण्ड शुभकार।।
हो सकते हैं एक साथ ही, इन सब क्षेत्रों में तीर्थेश।
एक सौ सत्तर एक काल के, तीर्थंकर का कथन विशेष।।

दोहा– ज्ञान ध्यान तप कर स्वयं, पावें केवल ज्ञान।
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ

ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

पुष्करार्ध पूरब के भरत, क्षेत्र में पहिचानिए।
नगरी अयोध्या में तीर्थंकर, जन्म लेते मानिए।।
सद्दर्श ज्ञानाचरण धारी, कर्म का क्षय जो करे।
शिवमार्ग के राही बने, जिन मोक्ष लक्ष्मी को वरें।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरब के ऐरावत, क्षेत्र में मंगलमयी।
नगरी अयोध्या में तीर्थंकर, जन्म लेते कर्म क्षयी।।
सद्दर्श ज्ञानाचरण धारी, कर्म का क्षय जो करें।
शिव मार्ग के राही बने जिन, मोक्ष लक्ष्मी को वरें।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तांटक छन्द)

पूरव पुष्करार्ध विदेह जहाँ, जिसमें 'कच्छा' शुभ देश महा।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह कहा, शुभ देश 'सुकच्छा' शोभ रहा।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह मही, जिसमें 'महाकच्छा' देश सही।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वही।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महाकच्छविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह अहा, जिसमें 'कच्छकावति' देश रहा।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह धरा, 'आवर्त्ता' जिसमें देश खरा।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह कहा, 'लांगलावर्त्ता' शुभ देश रहा।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह कहे, शुभ देश 'पुष्कला' मध्य रहे।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह गहे, 'पुष्कलावति' जिसमें देश रहे।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह खरा, 'वत्सा' शुभ देश की श्रेष्ठ धरा।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह महाँ, जहँ देश 'सुवत्सा' श्रेष्ठ कहा।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह कह्यो, जिसमें 'महावत्सा' देश रह्यो।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वहीं।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पुष्करार्ध विदेह विषे, 'पुष्कलावति' सुन्दर देश दिपे।
है आर्य खण्ड शुभकार मही, जन्में तीर्थंकर पूज्य वही।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह बताया,
'रम्यादेश में आर्य खण्ड अनुपम कहलाया।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भई,
कल्याणक भू कहलाए वह अतिशय सुखदायी।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह निराला,
देश 'सुरम्या' आर्य खण्ड अघ हरने वाला।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह कहाए,
'रमणीया' शुभ देश में आर्य भूमि कहलाए।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह मही है,
देश 'मंगलावति में खण्ड आर्य सही है।

तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी॥18॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह जानिए,
'पद्मा' देश में आर्यखण्ड है सही मानिए।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी॥19॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह गाइये।
देश 'सुपद्मा' आर्य खण्ड है सही मानिए।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी॥20॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह अचल है,
देश 'महापद्मा' में खण्ड आर्य मंगल है।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी॥21॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह कहाए,
देश 'पद्मकावति' में आर्य खण्ड शुभ आए।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी॥22॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह धरा है,
शंखा देश में आर्य खण्ड शुभ रहा खरा है।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी॥23॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में क्षेत्र विदेह कहा है,
'नलिना' देश में आर्य खण्ड शुभकार रहा है।
तीर्थंकर का जन्म होय जिस भू में भाई,
कल्याणक भू कहलाए, वह अतिशय सुखदायी॥24॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंगप्रयात छन्द)

पुष्करार्ध पूरव में है विदेह भाई,
'कुमुदा' है देश जिसमें परम सौख्यदायी।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी॥25॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में है विदेह भाई,
'सरिता' शुभ देश की फैली प्रभुताई।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी॥26॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में है विदेह आला,
'वप्रा' है देश जिसमें मन हरने वाला।

तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में है विदेह भाई,
जिसमें 'सुवप्रा' देश है देश सौख्यदायी।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में है विदेह जानो,
'महावप्रा' देश है जिसमें शुभ मानो।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते है जिनकी शुभकारी।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में शुभ विदेह गाया, देश
'वप्रकावती' जिसमें बतलाया।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में शुभ विदेह सोहे,
'गंधा' शुभ देश भाई मन को जो मोहे।।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में है विदेह भाई,
देश 'सुगंधा' की महिमा जग गाई।

तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में है शुभ विदेह पाया,
देश 'गंधिला' की गाई जग माया।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में शुभ विदेह जानो,
देश 'गंधमालिनी' शुभकारी मानो।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरव में चौंतिस शुभकारी,
देश कहे अनुपम जो सर्व सौख्यकारी।
तीर्थंकर होंय जहाँ संयम के धारी,
पूजा हम करते हैं जिनकी शुभकारी।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुर्त्रिंशत् विदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय

दोहा– **पुष्करार्ध पश्चिम दिशा, में हैं, चौंतिस देश।**
जिन की पूजा हेतु है, पुष्पाञ्जली विशेष।।

।।इति पंचम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

स्थापना

पाँच भरत ऐरावत इक सौ, साठ विदेह क्षेत्र मनहार।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, के हैं आर्य खण्ड शुभकार॥
हो सकते हैं एक साथ ही, इन सब क्षेत्रों में तीर्थेश।
एक सौ सत्तर एक काल के, तीर्थंकर का कथन विशेष॥

दोहा– **ज्ञान ध्यान तप कर स्वयं, पावं केवल ज्ञान।**
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

पुष्करार्ध पश्चिम में भाई, भरत क्षेत्र है मंगलकार।
आर्य खण्ड में तीर्थंकर जिन, संयमधर के हों भवपार॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, जिनका हम करते गुणगान।
विशद भावना भाते तव पद, हो जाए मेरा कल्याण॥1॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में अनुपम, ऐरावत है क्षेत्र महान।
आर्य खण्ड से तीर्थंकर जिन, सुपद प्राप्त करते निर्वाण॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, जिनका हम करते गुणगान।
विशद भावना भाते तव पद, हो जाए मेरा कल्याण॥2॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपेन्द्रवज्रा छन्द)

पुष्करार्ध द्वीप शुभ पश्चिम कहाया,
आर्य खण्ड भाई विदेह में गाया।
'कच्छा' शुभ देश में तीर्थंकर जानो,
पाते हैं शिव पद जो संयम धर मानो॥3॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप शुभ पश्चिम में भाई,
है विदेह में आर्य खण्ड सौख्यदायी।
'सुकच्छा' सुदेश में तीर्थंकर जानो,
पाते है शिवपद जो संयम धर मानो॥4॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप शुभ पश्चिम निराला,
है विदेह में आर्य खण्ड शुभ आला।
देश 'महाकच्छा' में तीर्थंकर जानो,
पाते हैं शिवपद जो संयमधर मानो॥5॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महाकच्छविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप शुभ पश्चिम कहलाए,
आर्य खण्ड भाई विदेह में आए।
देश 'कच्छकावति' में तीर्थंकर जानो,
पाते हैं शिवपद जो संयम धर मानो॥6॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में सोहे शुभकारी,
है विदेह में आर्य खण्ड मनहारी।
देश 'आवर्त्ता' में तीर्थंकर जानो,
पाते हैं शिवपद जो संयम धर मानो।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप शुभ पश्चिम बताया,
आर्य खण्ड भाई विदेह में गाया।
देश 'लांगलावर्त' में तीर्थंकर जानो
पाते हैं शिव पद जो संयम धर मानो।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप यह पश्चिम कहाए,
आर्य खण्ड देखो विदेह में आए।
देश 'पुष्कला' में तीर्थंकर जानो,
पाते हैं शिवपद जो संयम धर मानो।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम द्वीप रहा भाई,
है विदेह में आर्य खण्ड सौख्यदायी।
देश 'पुष्कलावती' में तीर्थंकर जानो,
पाते है शिव पद जो संयम धर मानो।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप शुभ पश्चिम में आए,
शुभ विदेह में आर्य खण्ड कहलाए।
देश कहा 'वत्सा' में तीर्थंकर स्वामी,

संयम जो धारण कर होवें शिवगामी।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम विदेह शुभ गाया,
आर्य खण्ड में देश सुवत्सा पाया।
संयमधर तीर्थंकर मुनिवर जी भाई,
शिवपद जो पाते है अनन्त सौख्यदायी।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम विदेह सौख्यकारी,
आर्य खण्ड में 'महावत्सा' मनहारी।
संयमधर तीर्थंकर मुनिवर जी भाई,
शिवपद जो पाते हैं अनन्त सौख्यदायी।।113।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम विदेह है निराला,
आर्य खण्ड में वत्सकावति आला।
संयमधर तीर्थंकर मुनिवर जी भाई,
शिवपद जो पाते हैं अनन्त सौख्यदायी।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम विदेह क्षेत्र जानो,
आर्य खण्ड में देश 'रम्या' पहिचानो।
संयमधर तीर्थंकर मुनिवर जी भाई,
शिवपद जो पाते हैं अनन्त सौख्यदायी।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप पश्चिम विदेह गाया,
आर्य खण्ड देश 'सुरम्या' कहाया।
संयमधर तीर्थंकर मुनिवर जी भाई,
शिवपद जो पाते हैं अनन्त सौख्यदायी॥16॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम विदेह क्षेत्र पाए,
आर्य खण्ड में देश रमणीया कहाए।
संयमधर तीर्थंकर मुनिवर जी भाई,
शिवपद जो पाते हैं अनन्त सौख्यदायी॥17॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप पश्चिम विदेह जानो,
आर्य खण्ड मंगला-वती देश मानो।
संयमधर तीर्थंकर मुनिवर जी भाई,
शिवपद जो पाते हैं अनन्त सौख्यदायी॥18॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

पुष्करार्ध पश्चिम में भाई, आर्य खण्ड गाया सुखदायी।
'पद्मा देश विदेह में आए, तीर्थंकर शिव पद को पाए॥19॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में होई, आर्य खण्ड विदेह में सोई।
देश 'सुपद्मा' मन को भाए, तीर्थंकरी शिव पद को पाए॥20॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम कहलाए, आर्य खण्ड विदेह में आए।
देश 'महापद्मा' मनहारी, तीर्थंकर होते शिवकारी॥21॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम शुभ गाया, आर्य खण्ड विदेह में पाया।
देश 'पद्मकावति' कहलाए, तीर्थंकर शिवमार्ग दिखाए॥22॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम शुभकारी, आर्यखण्ड विदेह मनहारी।
'शंखा' देश में शिव पथ गामी, होते हैं तीर्थंकर स्वामी॥23॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में जानो, आर्य खण्ड विदेह में मानो।
'नलिना देश' में श्री जिन स्वामी, होते हैं शिवपथ के गामी॥24॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम शुभकारी, आर्यखण्ड विदेह अघहारी।
'कुमुदा देश' में ध्यान लगाते, तीर्थंकर शिव पदवी पाते॥25॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम मन भाए, आर्य खण्ड विदेह में आए।
'सरिता देश' की महिमा न्यारी, तीर्थंकर होते शिवहारी॥26॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में सोहे, आर्य खण्ड विदेह मन मोहे।
'वप्रा देश' में संयम धारी, तीर्थंकर शिव पद धारी॥27॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम सुखदायी, आर्य खण्ड विदेह में भाई।
'देश सुवप्रा' मन को भाए, मोक्ष महा पद प्राणी पाए।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम कहलाए, आर्यखण्ड विदेह में आए।
देश 'महावप्रा' से स्वामी, तीर्थंकर होते शिवगामी।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्मिच में सोहे, आर्य खण्ड विदेह मन मोहे।
'देश वप्रकावति' शुभकारी, जहाँ से जिन होते शिवकारी।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में जानो, आर्य खण्ड विदेह में मानो।
'गंधा' देश में शिव सुखदायी, तीर्थंकर होते हैं भाई।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम मनहारी, आर्य खण्ड विदेह शुभकारी।
'देश सुगंधा' रहा निराला, भवि को शिव पद देने वाला।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में गाया, आर्य खण्ड विदेह मन भाया।
'देश गंधिला' है मनहारी, भवि जीवों को है शिवकारी।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम दिश आये, आर्य खण्ड विदेह कहलाए।
'गंधमालनी' मंगलकारी, होते तीर्थंकर शिवकारी।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम सुदीप में, विधुन्माली गिरि के पास।
बत्तिस देश विदेह के गाये, कर्म भूमि कहलाएँ खास।।
भरत क्षेत्र दक्षिण उत्तर में, ऐरावत है क्षेत्र महान।
इन चौंतिस क्षेत्रों में होते, पूज्य कहे वह जिन भगवान।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुर्त्रिंशत् क्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवशरण विभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं सर्वकर्म भूमि स्थित सप्तत्यधिक शत समवशरण मध्य विराजमानचिन्त्य विभूति सहित तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **एक सौ सत्तर क्षेत्र में, होते जिन तीर्थेश।**
शिवपदवी पाते प्रभू, धार दिगम्बर भेष।।

(शम्भू छन्द)

ढाई द्वीप में एक सौ सत्तर, कर्म भूमियाँ रही महान।
तीर्थंकर ले जन्म जहाँ से, प्राप्त करें शुभ पद निर्वाण।।
मध्य लोक के मध्य में भाई, जम्बू द्वीप रहा शुभकार।
भरत क्षेत्र दक्षिण में जिसके, शोभित होता धनुषाकार।।
छह खण्डों के मध्य है जिसमें, आर्य खण्ड अतिशय अभिराम।
शास्वत जन्म भूमि है जिसमें, नगर अयोध्या जिसका नाम।।
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, शास्वत तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
कर्म नाश कर केवलज्ञानी, जहाँ से करते मोक्ष प्रयाण।।
कालदोष के कारण भाई, बने यहाँ कई जन्म स्थान।
तीर्थंकर सामान्य केवली, आदिक पाए पद निर्वाण।।
रहा क्षेत्र ऐरावत भाई, उत्तर दिश में महति महान।
भरत क्षेत्र सम सारी रचना, बतलाए हैं जिन भगवान।।
जम्बू द्वीप के मध्य में सोहे, शास्वत भूमी क्षेत्र विदेह।
मध्य सुमेरू जिसके अनुपम, शोभा पाए निःसन्देह।।
सीता सीतोदा सरिताएँ, पूरव पश्चिम बहें प्रधान।
चार भाग होते विदेह के, है आगम का यह व्याख्यान।।
जिनके मध्य में उत्तर दक्षिण, चार-चार फैले वक्षार।

जम्बू द्वीप में उप विदेह सब, बत्तिस होते मंगलकार।।
भरतैरावत अरु विदेह के, कच्छादिक सब चौंतिश देश।
तीर्थंकर जिन जन्म प्राप्त कर, जहाँ से पावें मोक्ष विशेष।।
एक लाख योजन का भाई, जम्बूद्वीप है गोलाकार।
लवण समुद्र घेरे है जिसको, दो योजन जिसका विस्तार।।
योजन चार का द्वीप धातकी, जिसमें हैं गिरि इष्वाकर।
उत्तर दक्षिण लम्बे फैले, स्वर्णाभामय अपरम्पार।।
पूरव पश्चिम द्वीप धातकी, के हो जाते खण्ड महान।
सारी रचना दोनों भागों, में है जम्बू द्वीप समान।।
पुष्करवर शुभ द्वीप को घेरे, कालोदधि सागर गाया।
मानुषोत्तर गिरि मध्य द्वीप के, अतिशयकारी बतलाया।।
उत्तर दक्षिण इष्वाकारों, से हो जाते हैं दो भाग।
पूरव-पश्चिम पुष्करार्ध से, रखना भाई तुम अनुराग।।
दोनों भागों में रचना है, सारी जम्बू द्वीप समान।
एक सौ सत्तर क्षेत्र कहे सब, जिनमें होते हैं भगवान।।

दोहा– **तीर्थंकर सब क्षेत्र में, हो सकते हैं साथ।**
उनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवशरणमध्यविराजमाना चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **तीन लोक में पूज्य हैं, तीर्थंकर भगवान।**
जिनकी अर्चा कर मिले, जीवों को निर्वाण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते रोहिणी सेक्टर 3 स्थित 1008 श्री पार्श्वनाथ जिनालय मध्ये पौष मासे कृष्ण पक्षे पञ्चमी रविवासरे श्री एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

आरती

(तर्जः–आज करें श्री विशदसागर की....)

आज करें जिन तीर्थंकर की, आरती अतिशयकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, जिनवर के दरबार।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....

सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाई।
शुभ तीर्थंकर प्रकृति पद में, तीर्थंकर के पाई।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....।।1।।

मिथ्या कर्म नाशकर क्षायक, सम्यक्दर्शन पाया।
प्रबल पुण्य का योग प्रभु के, शुभ जीवन में आया।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....।।2।।

गर्भ जन्मकल्याणक आदि, आकर देव मानते।
केवलज्ञान प्रकट होने पर, समवशरण बनवाते।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....।।3।।

समवशरण के मध्य प्रभु की, शोभा है मनहारी।
उभय लक्ष्मी से सज्जित है, महिमा अतिशयकारी।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....।।4।।

सर्व कर्म को नाश प्रभु जी, मोक्ष महल में जाते।
विशद सौख्य में लीन हुए फिर, लौट कभी न आते।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....।।5।।

तीर्थंकर पद सर्वश्रेष्ठ है, उसको तुमने पाया।
उस पदवी को पाने हेतु, मेरा मन ललचाया
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....।।6।।

नाथ आपकी आरती करके, उसके फल को पाएँ।
जगत् वास को छोड़ प्रभु जी, मोक्ष महल को पाएँ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....।।7।।

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.

दोहा– गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ब्र.आस्था दीदी

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।
सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥

विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥
भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ती करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हंत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हंत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. विशद पञ्चागम संग्रह
97. जिन गुरु भक्ती संग्रह
98. धर्म की दस लहरें
99. स्तुति स्त्रोत संग्रह
100. विराग वंदन
101. बिन खिले मुरझा गए
102. जिंदगी क्या है
103. धर्म प्रवाह
104. भक्ती के फूल
105. विशद श्रमण चर्या
106. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
107. इष्टोपदेश चौपाई
108. द्रव्य संग्रह चौपाई
109. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
110. समाधितन्त्र चौपाई
111. शुभषितरत्नावली
112. संस्कार विज्ञान
113. बाल विज्ञान भाग–3
114. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
115. विशद स्तोत्र संग्रह
116. भगवती आराधना
117. चिंतवन सरोवर भाग–1
118. चिंतवन सरोवर भाग–2
119. जीवन की मन:स्थितियाँ
120. आराध्य अर्चना
121. आराधना के सुमन
122. मूक उपदेश भाग–1
123. मूक उपदेश भाग–2
124. विशद प्रवचन पर्व
125. विशद ज्ञान ज्योति
126. जरा सोचो तो
127. विशद भक्ती पीयूष
128. विशद मुक्तावली
129. संगीत प्रसुन
130. आरती चालीसा संग्रह
131. भक्तामर भावना
132. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
133. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
134. विशद महाअर्चना संग्रह
135. विशद जिनवाणी संग्रह
136. विशद वीतरागी संत
137. काव्य पुञ्ज
138. पञ्च जाप्य
139. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
140. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
141. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह